International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

महाकवि कालिदास की कृतियों में भारतीय संस्कृति का निरूपण

Rinky Gupta

Assistant Professor, Department of Sanskrit, Govt. College, Kaman, Bharatpur, Rajasthan, India

सार: कालिदास अपनी विषय-वस्तु देश की सांस्कृतिक विरासत से लेते हैं और उसे वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के अनुरूप ढाल देते हैं। उदाहरणार्थ, अभिज्ञान शाकुन्तल की कथा में शकुन्तला चतुर, सांसारिक युवा नारी है और दुष्यन्त स्वार्थी प्रेमी है। इसमें कवि तपोवन की कन्या में प्रेमभावना के प्रथम प्रस्फुटन से लेकर वियोग, कुण्ठा आदि की अवस्थाओं में से होकर उसे उसकी समग्रता तक दिखाना चाहता है। उन्हीं के शब्दों में नाटक में जीवन की विविधता होनी चाहिए और उसमें विभिन्न रुचियों के व्यक्तियों के लिए सौंदर्य और माधुर्य होना चाहिए।

त्रैगुण्योद्भवम् अत्र लोक-चरितम् नानृतम् दृश्यते।
नाट्यम् भिन्न-रुचेर जनस्य बहुधापि एकम् समाराधनम्।।
कालिदास के जीवन के बारे में हमें विशेष जानकारी नहीं है। उनके नाम के बारे में अनेक किवदन्तियां प्रचलित हैं जिनका कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं है। उनकी कृतियों से यह विदित होता है कि वे ऐसे युग में रहे जिसमें वैभव और सुख-सुविधाएं थीं। संगीत तथा नृत्य और चित्र-कला से उन्हें विशेष प्रेम था। तत्कालीन ज्ञान-विज्ञान, विधि और दर्शन-तंत्र तथा संस्कारों का उन्हें विशेष ज्ञान था।

उन्होंने भारत की व्यापक यात्राएं कीं और वे हिमालय से कन्याकुमारी तक देश की भौगोलिक स्थिति से पूर्णतः परिचित प्रतीत होते हैं। हिमालय के अनेक चित्रांकन जैसे विवरण और केसर की क्यारियों के चित्रण (जो कश्मीर में पैदा होती है) ऐसे हैं जैसे उनसे उनका बहुत निकट का परिचय है।

I. परिचय

भारतीय साहित्य कि विभूति सम्पूर्ण कविकुल सम्राट कालिदास काव्य जगत के दैदीप्यमान रत्न हैं |
काव्य रसिकों ने इन्हें कविता -कामिनी -विलास कहा है |समालोचकों ने प्राचीन कवियों की गणना में कालिदास को 'कनिष्ठिकाधिष्ठित 'बताकर उनकी स्पर्धा में ठहरने वाले किसी अन्य प्रतिस्पर्धी कवि के अस्तित्व की संभावना का ही खंडन किया है - "पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः |

अद्यापि तत्तुल्य कवेर्भावदनामिका सार्थवती बभूवः ||"
जैसी किंवदन्ती कालिदास की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करती है |आचार्य आनन्दवर्धन ने भी कवि की गणना विश्व विख्यात महाकवियों में की है –
"अस्मिन्नतिविचित्रकविपरम्परावाहिनि संसारे कालिदासप्रभृतयो द्वित्राः पञ्चषा एव वा महाकवय इति गण्यते। "[1,2,3]
अर्थात् इस अतिविचित्र कवियों की परम्परा को वहन करने वाले संसार में कालिदास आदि दो तीन या पांच छः ही कवि गिने जाते हैं |
"(ध्वन्यालोक १/६)

महाकवि हमारे राष्ट्रीय कवि हैं तथा भारतीय संस्कृति के प्रमुख परिपोषक भी |इनकी काव्य वाणी में संपूर्ण भारत की संस्कृति बोलती है |कालिदास ने जैसा मानव हृदय के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों का निरीक्षण किया वैसा अन्य ने नहीं ,कालिदास अन्तर तथा बाह्य दोनों जगत् के सूक्ष्म निरीक्षक कवि हैं |

संस्कृत साहित्य के उपवन में कालिदास का समागम एक "वसन्त दूत "के रूप में हुआ है । उन्होंने संस्कृत भाषा को वाणी दी ,नए भाव ,नई दिशाएँ ,नए विचार और नई पद्धतियाँ दी हैं ।

कालिदास संस्कृत के सबसे बड़े कवि और नाटककार हुए । परवर्ती संस्कृत ,हिंदी एवं कुछ विषयों में विदेशी कवि भी कालिदास के ऋणी हैं । जर्मनी के प्रसिद्ध कवि "गेटे "के "फ़ाउस्ट "नामक नाटक में शाकुन्तल का प्रभाव परिलक्षित होता है । महाकवि कालिदास के विषय में बड़े -बड़े विद्वानों विचार प्रकट किये हैं ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

मैकडोनल के शब्दों में "कालिदास की कविता में भारतीय प्रतिभा का उत्कृष्ट रूप समाविष्ट है । उनके काव्य में भावों का ऐसा सामंजस्य है जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता । (ए हिस्ट्री ऑफ़ संस्कृत लिट्रेचर,पृ. ५५३)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में " भारतीय धर्म , दर्शन , शिल्प और साधना में जो कुछ उदात्त है ,जो कुछ ललित और मोहन है ,उनका प्रयत्न पूर्वक सजाया सँवारा रूप कालिदास का काव्य है । "
कालिदास की समता तो आज तक कोई और कवि कर ही नहीं पाया । उनकी सभी रचनाओं में अत्यंत प्रेम और भाव विभोर कर देने वाली अविनाशिनी शक्ति विद्यमान है । अतः दो सहस्र वर्षों बाद भी उनकी रचनाएँ यथावत आनंददायक हैं ।संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि बाणभट्ट ने लिखा है –

"निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु ।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥ "

मेघदूत की प्रसंशा करते हुए मनोमुग्ध होकर यूरोपीय विद्वजनों ने अपने योरोप के साहित्य में किसी काव्य को इसकी समता के योग्य नहीं माना । मिस्टर मोन फांचे (Mr.Mon Fanche) ने कहा है –

"There is nothing so perfect in the elegiac litreature of Europe as the Meghaduta of Kalidas."
एक अन्य जर्मन विद्वान ने कहा है –
"There exist for instance in our European litreature few pieces to be compared with the Meghaduta in Sentiment and beauty."

अभिज्ञानशाकुंतलम कालिदास की सर्वोत्कृष्ट रचना है । यह सात अङ्क का नाटक है इसमें हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त और महर्षि कण्व की पालिता धर्म -कन्या शकुन्तला की प्रणयगाथा निबद्ध है । महर्षि कण्व की अनुपस्थिति में उनके तपोवन में दुष्यंत और शकुन्तला का प्रथम मिलन होता है ,और वही मिलन "गन्धर्व विवाह" का रूप धारण कर लेता है । राजा दुष्यंत महर्षि कण्व के आगमन से पूर्व ही अपनी राजधानी को प्रस्थान करते समय अपनी प्रियतमा शकुन्तला को स्वनामांकित मुद्रिका देते हुए कहते हैं कि - यह मेरी याद दिलाएगी । इसी बीच अतिथि सत्कार में शकुन्तला की असावधानी दुर्वासा ऋषि के शाप का कारण बनती है । किन्तु उसकी दोनों सखियों को यह रहस्य पता है कि शापवश राजा शकुन्तला को देखकर तब तक नहीं पहचान सकेगा , जब तक वह किसी "अभिज्ञान "का दर्शन ना कर ले । महर्षि कण्व आश्रम में लौट कर शकुन्तला के " गन्धर्व विवाह " का समाचार ज्ञात करके प्रसन्न हैं तथा उसे गर्भवती जानकार राजा के पास भेजना चाहते हैं । आश्रम से राजधानी जाते समय सखियाँ शकुन्तला को बताती हैं की यदि राजा पहचानने से तुम्हें भूल करे तो उसे नामांकित मुद्रा दिखा देना । राजा शकुन्तला को शापवश नहीं पहचान पाता तो शकुन्तला उसको मुद्रिका दिखाना चाहती है किन्तु वह अँगूठी तो "शक्रावतार "में शची तीर्थ के जल को प्रणाम करते समय उसके हाथ से स्खलित हो चुकी थी । कुछ दिन बाद ही वह अँगूठी राजा के पास पहुँचती है ,तब वह सम्पूर्ण घटना का स्मरण करके शकुन्तला की खोज में जाते हैं । अंत में पुनर्मिलन के साथ नाटक समाप्त होता है ।
कालिदास ने अभिज्ञान - शाकुन्तल में महाभारत के "शकुन्तलोपाख्यान "के इतिवृत्त को अपनी नवनवोन्मेष शालिनी प्रतिभा से सरस एवं गरिमामय बनाकर प्रस्तुत किया है। चतुर्थ अङ्क में उनकी कला चरमोत्कर्ष पर
है - "काव्येषु नाटकं रम्यं ,तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्रापि चतुर्थोङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम् । । "[4,5,6]
और -"कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशकुन्तलम् ॥"
"अभिज्ञानशाकुन्तल "संस्कृत साहित्य का सर्वोत्कृष्ट नाटक है । इसके सात अंकों में दुष्यंत शकुन्तला के प्रेम ,वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है । इसका प्रधान रस संभोग(संयोग) श्रृंगार तथा विप्रलम्भ श्रृंगार है । करुण ,वीर ,अद्भुत ,हास्य ,भयानक ,और शान्त ये सहयोगी रस हैं । यह नाटक सुखान्त है इसमें वैदर्भी रीति का मुख्यतः प्रयोग हुआ है । इसके नायक दुष्यंत धीरोदात्त नायक हैं ।
दुष्यंत के व्यक्तित्व को सजीव बनाकर चित्रित किया है । दुष्यंत बलिष्ठ एवं पराक्रम शाली ,ललित कलाओं का मर्मज्ञ ,प्रकृति प्रेमी एवं कुशल चित्रकार है । उसमें मानवोचित दुर्बलताएं भी हैं ,किन्तु वह पुत्र वत्सल ,कवि ,कलाकोविद एवं कर्तव्य परायण राजा है ।

शकुन्तला निसर्ग कन्या है । पिता कण्व के प्रति उसके हृदय में असीम प्रेम है । कवि ने कण्व को वत्सल पिता एवं सद्गृहस्थ के रूप में चित्रित किया है ।

अभिज्ञानशाकुन्तल में कालिदास ने प्रेम और सौंदर्य का सुन्दर सामंजस्य प्रस्तुत किया है । उन्होंने केवल मानव सौंदर्य का ही वर्णन नहीं किया है ,वरन प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रों का भी अत्यंत भव्य एवं मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है ।

महाकवि कालिदास ने अपने नाटकों में तत्कालीन समाज का चित्रण यथास्थान किया है । उस युग के सामाजिक ,सांस्कृतिक , राजनैतिक,धार्मिक एवं पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण अभिज्ञानशाकुन्तल में मिलता है ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

कालिदास की लोकप्रियता का कारण उनकी सरल ,परिष्कृत और प्रसाद गुण पूर्ण शैली है कालिदास में कल्पना की ऊँची उड़ान है ,भावों में गम्भीरता है । विचारों में जीवन की घनी अनुभूति है ,भाषा में लोच और प्रांजलता है । उनकी कविता में मादकता है ,घटना संयोजन सुविचारित है । बाह्य एवं अन्तः प्रकृति का सूक्ष्म विश्लेषण हुआ है । चरित्र चित्रण में वैयत्तिकता को प्रधानता दी गई है, वर्णनों में अलंकारों की प्रधानता न होकर प्राकृतिक सुषमा की प्रमुखता है । उनकी भाषा में ध्वन्यात्मकता और प्रवाह है । उनका शब्द कोष अगाध है । उनकी उपमाएं बेजोड़ होती हैं इसीलिए उनके विषय में "उपमा कालिदासस्य"यह कथन सुविश्रुत है । उन्होंने स्वाभाविक रूप से उपमा ,रूपक ,स्वभावोक्ति ,निदर्शना,दीपक ,विभावना ,व्यतिरेक ,अर्थान्तरन्यास ,अनुप्रास ,यमक ,श्लेष ,उत्प्रेक्षा ,आदि अलंकारों का प्रयोग किया है । इसी प्रकार विविध प्रकार के छन्दों का प्रयोग करने में कालिदास सिद्ध हस्त हैं । उनकी रचनाओं में आर्या ,अनुष्टुप ,वंशस्थ ,,वसन्ततिलका ,मालिनी ,मन्दाक्रान्ता ,शिखरिणी ,शार्दूलविक्रीड़ित आदि छन्द पाठकों का मन अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें भाव विभोर करते रहते हैं । कालिदास सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न महाकवि एवं नाटककार हैं । वे साहित्य प्रकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं । उनकी रचनाओं में स्वर्गीय आनन्द ,भौतिक विलास ,दैवी दिव्यता ,मानवीय मनोज्ञता और सात्विक सम्मोहन एक साथ सुलभ होकर निदर्शित है ।

कालिदास की रचनाओं में सभी नाट्य कला सम्बन्धी विशेषतायें हैं ,तथापि इनका प्रकृति चित्रण अप्रतिम एवं अत्यंत रमणीय है। कालिदास की काव्य कला का विकास ही प्रकृति वर्णन से आरम्भहोताहै।

कालिदास प्रकृति नटी के कुशल चितेरे हैं । उनका प्रकृति वर्णन सूक्षम और यथार्थ है प्रकृति को जितना महत्त्व पूर्ण स्थान कालिदास के काव्य में मिला है उतना परवर्ती साहित्य में नहीं । नारी सौंदर्य एवं नायिकाओं के अलंकरण के लिए भी वे प्राकृतिक उपादानों का ही ग्रहण करते हैं । जैसे वसंत पुष्पों से अलंकृत पार्वती –

"अशोकनिर्भत्सितपद्मरागमाकृष्टहेमद्युतिकर्णकारम् |
मुक्ताकलापीकृत्सिन्दुवारं वसन्तपुष्पाभरणं वहन्ती ||"(कुमारसम्भवम्३/५३)

अर्थात अशोक के पुष्प से पद्मराग मणि का तिरस्कार करने वाले ,सोने की कान्ति को ग्रहण करने वाले हार के समान किये गये निर्गुण्डी के पुष्पों वाले ऐसे वसन्त ऋतु के फूल रूप भूषण को धारण करति हुई (पर्वतराज कन्या दिखाई पड़ी ।)

प्रकृति के आलम्बन ,उद्दीपन ,मानवीकृत ,उपदेशात्मक मानव की सहचरी आदि विविध रूप कवि की कुशल लेखनी से मूर्त हो उठे हैं । कालिदास ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के दिव्या रूप की भी प्रतिष्ठा की है । अभिज्ञानशाकुंतलम् में तो आरम्भ से अंत तक कोमल एवं सरस प्रकृति का भव्य वर्णन मिलता है । शकुन्तला तो प्रकृति कन्या ही है । वह प्रकृति की उन्मुक्त वातावरण में ही उत्पन्न हुई ,प्रकृति ने ही उसका पालन पोषण किया और उसका श्रृंगार प्रसाधन दिए और उसका अधिकांश जीवन ही प्रकृति की गोद में ही व्यतीत हुआ । महर्षि कण्व के शब्दों में "शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् "उसने अपना अन्तिम जीवन भी प्रकृति की गोद में ही व्यतीत किया |

मेघदूत गीतिकव्य तो प्रकृति काव्य ही है | उनका मेघ एक प्रकृति का ही अंग है ;तथा उसका सारा कार्य व्यापार प्रकृति क्रीड़ा ही है । भारत वर्ष के भव्य प्राकृतिक दृश्य इस गीतिकाव्य में देखने को मिलते हैं । अतः यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि कालिदास मूलतः प्रकृति के ही कवि हैं ।

कवि की सर्वप्रथम रचना "ऋतुसंहार "है । इसमें कवि ने विभिन्न ऋतुओं से मानवों पर पड़ने वाले प्रभावों का तथा उनके परिणामों का सुन्दर सरस वर्णन किया है । उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों पर चेतन धर्म का समारोप कर उसका आलंकारिक चित्र प्रस्तुत किया है और कहीं कहीं प्रकृति को शुद्ध आलम्बन रूप में रखकर उसके प्रति अपना अनुराग व्यक्त किया है । कवि ने कामिनियों के उन विचारों और भावों का ही विशेष रूप से वर्णन किया है जो की इसमें प्रकृति के प्रभाव से उत्पन्न हुए हैं । इन कामिनियों के भावों का ही वर्णन करने के लिए ही कवि ने मानो प्रकृति की पृष्ठ भूमि का आश्रय लिया है ।

कालिदास कि प्रसंशा मे कहा गया है -
"पुष्पेषु चम्पा ,नगरीषु काञ्ची,
नदीषु गङ्गा ,नृपतौ च रामः |
नारीषु रम्भा .पुरुषेषु विष्णुः ,
काव्येषु माघः ,कवि कालिदासः ||"

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

II. विचार-विमर्श

जो बात यह महान कलाकार अपनी लेखिनी के स्पर्श मात्र से कह जाता है, अन्य अपने विशद वर्णन के उपरांत भी नहीं कह पाते। कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट कर देने और कथन की स्वाभाविकता के लिए कालिदास प्रसिद्ध हैं। उनकी उक्तियों में ध्वनि और अर्थ का तादात्मय मिलता है। उनके शब्द-चित्र सौन्दर्यमय और सर्वांगीण सम्पूर्ण हैं, जैसे – एक पूर्ण गतिमान राजसी रथ (विक्रमोर्वशीय, 1.4), दौड़ते हुए मृग-शावक (अभिज्ञान-शाकुन्तल, 1.7), उर्वशी का फूट-फूटकर आंसू बहाना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 15), चलायमान कल्पवृक्ष की भांति अन्तरिक्ष में नारद का प्रकट होना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 19)। उपमा और रूपकों के प्रयोग में वे सर्वोपरि हैं।[6,7,8]

सरसिजमनुविद्धं शैवालेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमिधकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।
'कमल यद्यपि शिवाल में लिपटा है, फिर भी सुन्दर है। चन्द्रमा का कलंक, यद्यपि काला है, किन्तु उसकी सुन्दरता बढ़ाता है। ये जो सुकुमार कन्या है, इसने यद्यपि वल्कल-वस्त्र धारण किए हुए हैं तथापि वह और सुन्दर दिखाई दे रही है। क्योंकि सुन्दर रूपों को क्या सुशोभित नहीं कर सकता ?'
कालिदास की रचनाओं में सीधी उपदेशात्मक शैली नहीं है अपितु प्रीतमा पत्नी के विनम्र निवेदन सा मनुहार है। मम्मट कहते हैं : 'कान्तासम्मिततयोपदेशायुजे।' उच्च आदर्शों के कलात्मक प्रस्तुतीकरण से कलाकार हमें उन्हें अपनाने को विवश करता है। हमारे समक्ष जो पात्र आते हैं हम उन्हीं के अनुरूप जीवन में आचरण करने लगते हैं और इससे हमें व्यापक रूप में मानवता को समझने में सहायता मिलती है।

संस्कृतिक एवं सामाजिक तत्त्व
एक महान सांस्कृतिक विरासत पर कालिदास के समृद्ध एवं उज्जवल व्यक्तित्व की छाप है और उन्होंने अपनी रचनाओं में मोक्ष, व्यवस्था और प्रेम के आदर्शों को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने व्यक्ति को संसार के दु:ख-दर्द और संघर्षों से अवगत कराने के लिए, प्रेम-वासना, इच्छा-आकांक्षा, आशा-स्वप्न, सफलता विफलता आदि को अभिव्यक्ति दी है। भारत ने जीवन को अपनी समग्रता में देखा है और उसमें किसी भी विखण्डन का विरोध किया है।

कवि ने उन मानसिक द्वन्द्वों का वर्णन किया है जो आत्मा को विभक्त करते हैं और इस तरह उन्होंने इसे समग्रता में देखने में हमारी सहायता की है।

कालिदास की रचनाओं में हमारे लिए सौंदर्य के क्षण, साहसिक घटनाएं, त्याग के दृश्य और मानव मन की नित-नित बदलती मनः स्थितियों के रूप संरक्षित हैं। उनकी कृतियां मानव प्रारब्ध के वर्णनातीत चित्रण के लिए सदैव पढ़ी जाती रहेंगी क्योंकि कोई महान कवि ही ऐसी प्रस्तुतियां दे सकता है। उनकी अनेक पंक्तियां संस्कृत में सूक्तियां बन गई हैं। उनकी मान्यता है कि हिमालय क्षेत्र में विकसित संस्कृति विश्व की संस्कृतियों की मापदण्ड हो सकती है। यह संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक है। हम सभी सामान्यतः समय-चक्र में कैद हैं और इसीलिए हम अपने अस्तित्व की संकीर्ण सीमाओं में घिरे हैं। अतः हमारा उद्देश्य अपने मोहजालों से मुक्त होकर चेतना के उस सत्य को पाने का होना चाहिए जो देश-काल से परे है जो अजन्मा, चरम और कालातीत है। हम इसका चिंतन नहीं कर सकते, इसे वर्गों, आकारों और शब्दों में विभाजित नहीं कर सकते। इस चरम सत्य की अनुभूति का ज्ञान ही मानव का उद्देश्य है। रघुवंश के इन शब्दों को देखिए - 'ब्रह्माभूयम् गतिम् अजागम्।' ज्ञानीपुरुष कालातीत परम सत्य के जीवन को प्राप्त होते हैं।

वह जो चरम सत्य है सभी अज्ञान से परे है और वह आत्मा और पदार्थ के विभाजन से ऊपर है। वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। वह अपने को तीन रूपों में व्यक्त करता है (त्रिमूर्ति) ब्रह्मा, विष्णु और शिव – कर्त्ता, पालक तथा संहारक। ये देव समाज पद वाले हैं आम जीवन में कालिदास शिवतंत्र के उपासक हैं। तीनों नाटकों – अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र – की आरम्भिक प्रार्थनाओं से प्रकट होता है कि कालिदास शिव-उपासक थे। देखिए रघुवंश के आरम्भिक श्लोक में :

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ।
यद्यपि कालिदास परमात्मा के शिव रूप के उपासक हैं तथापि उनका दृष्टिकोण किसी भी प्रकार संकीर्ण नहीं है। परम्परागत हिन्दू धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण उदार है। दूसरों के विश्वासों को उन्होंने सम्मान की दृष्टि से देखा। कालिदास की सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति है और वे दुराग्रह और धर्मान्धता से मुक्त हैं। कोई भी व्यक्ति वह मार्ग चुन सकता है जो अच्छा लगता है क्योंकि अन्ततः ईश्वर के विभिन्न रूप एक ही ईश्वर के विभिन्न रूप हैं जो सभी रूपों में निराकार है।

कालिदास पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। यह जीवन में पूर्णता के मार्ग की एक अवस्था है। जैसे हमारा वर्तमान जीवन पूर्व कर्मों का फल है वैसे ही हम इस जन्म में प्रयासों से अपना भविष्य सुधार सकते हैं। विश्व पर सदाचार का शासन है। विजय अन्ततः अच्छाई की होगी। यदि कालिदास की रचनाएं दुखान्त नहीं हैं तो उसका कारण यह कि वे सामंजस्य और शालीनता के अन्तिम सत्य को स्वीकारते हैं। इस मान्यता के अन्तर्गत वे अधिकांश स्त्री-पुरुषों के दुःख-दर्दों के प्रति हमारी सहानुभूति को मोड़ देते हैं।

कालिदास की रचनाओं से इस गलत धारणा का निराकरण हो जाता है कि हिन्दू मस्तिष्क ने ज्ञान-ध्यान पर अधिक ध्यान दिया और सांसारिक दुःख-दर्दों की उन्होंने अवहेलना की। कालिदास के अनुभव का क्षेत्र व्यापक था। उन्होंने जीवन, लोक, चित्रों और फूलों में समान आनन्द लिया। उन्होंने मानव को सृष्टि (ब्रह्माण्ड) और धर्म की शक्तियों से अलग करके नहीं देखा। उन्हें मानव के सभी प्रकार के दुःखों, आकांक्षाओं, क्षणिक खुशियों और अन्तहीन आशाओं का ज्ञान था।

वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – मानव जीवन के चार पुरुषार्थों में सामंजस्य के पोषक थे। अर्थ पर, जिसमें राजनीति और कला भी सम्मिलित है धर्म का शासन रहना चाहिए। साध्य और साधन में परस्पर सह-संबंध है। जीवन वैध (मान्य) संबंधों से ही जीने योग्य रहता है। इन संबंधों को स्वच्छ और उज्जवल बनाना ही कवि का उद्देश्य था।

इतिहास प्राकृतिक तथ्य न होकर नैतिक सत्य है। यह काल-क्रम का लेखा-जोखा मात्र नहीं है। इसका सार अध्यात्म में निहित है जो आगे की पीढ़ियों को ज्ञान प्रदान करता है। इतिहासकारों को अज्ञान को भेद कर उस आन्तरिक नैतिक गतिशीलता को आत्मसात करना चाहिए। इतिहास मानव की नैतिक इच्छा का फल है जिसकी अभिव्यक्तियां स्वतंत्रता और सृजन हैं।

रधुवंश के राजा जन्म से ही निष्कलंक थे। धरती से लेकर समुद्र तक (आसमुद्रक्षितिसानाम्) इनका व्यापक क्षेत्र में शासन था। इन्होंने धन का संग्रह दान के लिए किया, सत्य के लिए चुने हुए शब्द कहे, विजय की आकांक्षा यश के लिए की और गृहस्थ जीवन पुत्रेष्णा के लिए रखा। बचपन में शिक्षा, युवावस्था में जीवन के सुखभोग, वृद्धावस्था में आध्यात्मिक जीवन और अन्त में योग या ध्यान द्वारा शरीर का त्याग किया।

राजाओं ने राजस्व की वसूली जन-कल्याण के लिए की, 'प्रजानाम् एवं भूत्यार्थम्' जैसे सूर्य जल लेता है और उसे सहस्रगुणा करके लौटा देता है। राजाओं का लक्ष्य धर्म और न्याय होना चाहिए। राजा ही प्रजा का सच्चा पिता है, वह उन्हें शिक्षा देता है, उनकी रक्षा करता है और उन्हें जीविका प्रदान करता है जबकि उनके माता-पिता केवल उनके भौतिक जन्म के हेतु हैं। राजा अज के राज्य में प्रत्येक व्यक्ति यही मानता था कि राजा उनका व्यक्तिगत मित्र है।[2,3,4]

शाकुन्तलं में तपस्वी राजा से कहता है : 'आपके शस्त्र त्रस्त और पीड़ितों की रक्षा के लिए हैं न कि निर्दोषों पर प्रहार के लिए।' 'आर्त त्राणाय वाह शस्त्रम् न प्रहारतुम् अनगसि।' दुष्यन्त एवं शकुन्तला का पुत्र भरत, जिसके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा है, सर्वदमन भी कहलाता है – यह केवल इसलिए नहीं कि उसने केवल भयानक वन्य पशुओं पर विजयी पायी अपितु उसमें आत्मसंयम भी था। राजा के लिए आत्मसंयम भी अनिवार्य है।

रघुवंश में अग्निवर्ण दुराचारी हो जाता है। उसके अन्तःपुर में इतनी अधिक नारियां हैं कि वह उनका सही नाम तक नहीं जान पाता। उसे क्षय हो जाता है और उस अवस्था में भी भोग का आनन्द नहीं छोड़ पाता और उसकी मृत्यु हो जाती है। शालीन मानव-जीवन के लिए संयम अनिवार्य है। कालिदास कहते है : 'हे कल्याणी, खान से निकलने के उपरांत भी कोई भी रत्न स्वर्ण में नहीं जड़ा जाता, जब तक उसे तराशा नहीं जाता।'

यद्यपि कालिदास की कृतियों में तप को भव्यता प्रदान की गई है और साधु और तपस्वियों को पूजनीय रूप में प्रस्तुत किया गया है, तथापि कहीं भी भिक्षापात्र की सराहना नहीं की गई।

धर्म के नियम जड़ एवं अपरिवर्तनीय नहीं हैं। परम्परा को अपनी अन्तर्दृष्टि और ज्ञान से सही अर्थ दिया जाना चाहिए। परम्परा और व्यक्तिगत अनुभव एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां हमें एक ओर अतीत विरासत में मिला है वहीं हम दूसरी ओर भविष्य के न्यासधारी (ट्रस्टी) हैं। अपने अन्तिम विश्लेषण में प्रत्येक को सही आचरण के लिए अपने अन्तःकरण में झांकना चाहिए। भगवतगीता के आरम्भिक अध्याय में जब अर्जुन क्षत्रिय होने के नाते समाज द्वारा आरोपित युद्ध करने के अपने दायित्व से मना करते हैं और जब सुकरात कहते हैं, 'एथेंसवासियों ! मैं ईश्वर की आज्ञा का पालन करूंगा, तुम्हारी आज्ञा का नहीं।' तो वे ऐसा अपनी अर्न्तात्मा के निर्देश पर कहते हैं न कि किसी बंधे-बंधाए नियमों के अनुपालन के कारण। आरम्भिक वैदिक साहित्य में जड़-चेतन की एकरूपता का निरूपण है और अनेक वैदिक देवी-देवता प्रकृति के प्रमुख पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आत्मज्ञान की खोज में प्रकृति की शरण में जाने, हिमश्रृंगों पर जाने या तपोवन में जाने का शिकार बहुत प्राचीन काल से हमारे यहां विद्यमान रहा है। मानव के रूप में हमारी जड़े प्रकृति में हैं और हम नाना रुपों में इसे जीवन में देखते हैं। रात और दिन, ऋतु-परिवर्तन – ये सब मानव-मन के परिवर्तन, विविधता और चंचलता के प्रतीक हैं। कालिदास के लिए प्रकृति यन्त्रवत और निर्जीव नहीं है। इसमें एक संगीत है। कालिदास के पात्र

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

पेड़-पौधों, पर्वतों तथा नदियों के प्रति संवेदनशील हैं और पशुओं के प्रति उनमें भ्रात भावना है। हमें उनकी कृतियों में खिले हुए फूल, उड़ते पक्षी और उछलते-कूदते पशुओं के वर्मन दिखाई देते हैं। रघुवंश में हमें गाय के प्रेम का अनुपम वर्णन मिलता है। ऋतुसंहार में षट ऋतुओं का हृदयस्पर्शी विवरण है। ये विवरण केवल कालिदास के प्राकृतिक-सौन्दर्य के प्रति उनकी दृष्टि को नहीं अपितु मानव-मन के विविध रूपों और आकांक्षाओं की समझ को भी प्रकट करते हैं। कालिदास के लिए नदियों, पर्वतों, वन-वृक्षों में चेतन व्यक्तित्व है जैसा कि पशुओं और देवों में है।

शाकुन्तला प्रकृति की कन्या है। जब उसे उसकी अमानुषी मां मेनका ने त्याग दिया तो आकाशगामी पक्षियों ने उसे उठाया और तब तक उसका पालन-पोषण किया जब तक कि कण्ठ ऋषि आश्रम में उसे नहीं ले गए। शकुन्तला ने पौधों को सींचा, उन्हें अपने साथ-साथ बढ़ते देखा और जब उनके ऊपर फल-फूल आए तो ऐसे अवसरों को उसने उत्सवों की भांति मनाया। शाकुन्तला के विवाह के अवसर पर वृक्षों ने उपहार दिए, वनदेवियों ने पुष्प-वर्षा की, कोयलों ने प्रसन्नता के गीत गाए। शकुंतला की विदाई के समय आश्रम दुःख से भर उठा। मृगों के मुख से चारा छूट कर गिर पड़ा, मयूरों का नृत्य रुक गया और लताओं ने अपने पत्रों के रूप में अश्रु गिराए। सीता के परित्याग के समय मयूरों ने अपना नृत्य एकदम बन्द कर दिया, वृक्षों ने अपने पुष्प झाड़ दिए और मृगियों ने आधे चबाए हुए दूर्वादलों को मुंह से गिरा दिया।

कालिदास कोई विषय चुनते हैं और आँख में उसका एक सजीव चित्र उतार लेते हैं। मानस-चित्रों की रचना में वे बेजोड़ हैं। कालिदास का प्रकृति का ज्ञान यथार्थ ही नहीं था अपितु सहानुभूति भी था। उनकी दृष्टि कल्पना से संयुक्त है। कोई भी व्यक्ति तब तक पूर्णतः महिमामण्डित नहीं हो सकता जब तक कि वह मानव जीवन से इतर जीवन की महिमा और मूल्यों को नहीं जानता। हमें जीवन के समग्र रूपों के प्रति संवेदना विकसित करनी चाहिए। सृष्टि केवल मनुष्य के लिए नहीं रची गई है।

पुरुष और नारी के प्रेम ने कालिदास को आकर्षित किया और प्रेम के विविध रूपों के चित्रण में उन्होंने अपनी समृद्ध कल्पना का खुलकर उपयोग किया है। इसमें उनकी कोई सीमाएं नहीं हैं। उनकी नारियों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक आकर्षण है क्योंकि उनमें कालातीत और सार्वभौम गुण हैं जबकि पुरुष पात्र संवेदना शून्य और अस्थिर बुद्धि हैं। उनकी संवेदना सतही है जबकि नारी का दुःख-दर्द अन्तरतम का है।
पुरुष में स्पर्धा की भावना और स्वाभिमान उसके कार्यालय, कारखाने या रणक्षेत्र में उपयोगी हो सकते हैं पर उनकी तुलना नारी के सुसंस्कार, सौन्दर्य और शालीनता के गुणों से नहीं हो सकती। अपने व्यवस्था और सामंजस्य के प्रेम के कारण नारी परम्परा (संस्कृति) को जीवित रखती है।

जब कालिदास नारी के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं तो वे शास्त्रीय शैली को अपनाते हैं और ऐसा करते समय वे अपने विवरणों के वासनाजन्य होने या अतिविस्तृत हो जाने का खतरा मोल लेते हैं। मेघदूत में 'मेघ' को 'यक्ष' अपनी पत्नी का विवरण (हुलिया) इस प्रकार देता है :

'नारियों में वह ऐसी है मानो विधाता ने उसका रचना सर्वप्रथम की है, पतली और गोरी है, दांत पतले और सुन्दर हैं। नीचे के ओष्ठ पके बिम्ब फल (कुंदरू) की भांति लाल है। कमर पतली है। आँखें उसकी चकित हिरणी जैसी हैं। नाभि गहरी है तथा चाल उसकी नितम्बभार से मन्द और स्तनभार से आगे की ओर झुकी हुई है।'[6,7,8]

कालिदास द्वारा प्रस्तुत की गई नारियों में हमें अनेक रोचक प्रकार दिखाई देते हैं। उनमें से अनेक को समाज के परम्परागत बहानों और सफाई की आवश्यकता नहीं है। उनके द्वन्द्व और तनावों को सामंजस्य की आवश्यकता थी। पुरुष संदेहमुक्त अनुभव करते थे और वे पूर्ण सुरक्षित थे। बहुविवाह उनके लिए आम बात थी, परन्तु कालिदास की नारियां कल्पनाशील और चतुर हैं अतः वे संदेह और अनिश्चय के घेरे में आ जाती हैं। वे सामान्यतः अस्थिर नहीं हैं परन्तु वे विश्वसनीय, निष्ठावान तथा प्रेममय हैं।

प्रेम के लिए झेली गई कठिनाइयां और यातनाएं प्रेम को और गहन बनाती हैं। मेघदूत में अजविलाप और रतिविलाप में वियोग की करुणामय मार्मिक अभिव्यक्ति है। प्रेम का संयोग रूप विक्रमोर्वशीय में है।

मालविकाग्निमित्र में रानी को धरिणी कहा गया है क्योंकि वह सब कुछ सहती है। उसमें गरिमा और सहिष्णुता है। इरावती कामुक, अविवेकी, शंकालु, अतृप्त और मनमानी करने वाली है। जब राजा ने उसे छोड़कर मालविका को अपनाया तो वह कठोर शब्दों में शिकायत करती है और कटु शब्दों में राजा को फटकारती है।

मालविका के प्रति अग्निमित्र का प्रेम इन्द्रिपरक है। राजा दासी की सुन्दरता और लावण्य पर मोहित है। विक्रमोर्वशीय में पात्रों में दैवी और मानवीय गुणों का मिश्रण है। उर्वशी का चरित्र सामान्य जीवन से हटकर है। उसमें इतनी शक्ति है कि अदृश्य रूप से वह अपने प्रेमी को देख सकती है तथा उसकी बातें सुन सकती है। उसमें मातृप्रेम नहीं है क्योंकि वह अपने पति को खोने के स्थान पर अपने बच्चे का परित्याग कर देती है। उसका प्रेम स्वार्थजन्य है।

पुरुरवा भावविह्वल होकर प्रेम के गीत गाता है जिसका भावार्थ यह है कि विश्व की सत्ता उतनी आनन्ददायक नहीं जितना प्रेम आनन्ददायक है। विफल प्रेमी के लिए संसार दु:ख और निराशा से भरा है और सफल प्रेमी के लिए वह सुख और आनन्द से भरा है। इस नाटक में हम प्रेम को फलीभूत होते देखते हैं। इसमें भूमि और आकाश एक होते हैं। भौतिक आकर्षण पर आधारित वासना नैतिक सौन्दर्य और आध्यात्मिक ज्ञान में परिवर्तित होती है।

III. परिणाम

कालिदास विश्व के महान कवियों में अग्रणी हैं। उन्हें किसी देशकाल की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। संपूर्ण भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर उन्होंने उसे अपने काव्य के माध्यम से व्यक्त किया है। उनके काव्य का कथानक देशकाल परिस्थिति से मुक्त मानव समाज के दर्पण के रूप में प्रतिबिंबित होता है। यह कहना है यूनिवर्सिटी के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. करुणेश शुक्ल का। वह चंद्रकांति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज में कालिदास जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे।

कालिदास ने भारतीय जीवन दर्शन और राष्ट्रीय जीवन मूल्यों को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में भाव, भाषा, कथानक, माधुर्य, मानवीय संवेदना, प्रकृति सौंदर्य का मानवीकरण एवं प्रकृति चित्रण जितने मर्यादित ढंग से परिलक्षित होता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। सही अर्थों में उनका काव्य भारतीय संस्कृति का दर्पण है। इस मौके पर कॉलेज के प्रबंधक डॉ. रामरक्षा पांडेय ने कहा कि कालिदास की रचना अभिज्ञान शाकुंतलम् में उनकी नाट्यशैली एवं कलात्मक कौशल का अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है। कुमारसंभवम् में हिमालय वर्णन, रघुवंश में दिलीप की गो सेवा और रघु की उदारता और इंदुमति का विलाप आदि ऐसे प्रसंग हैं जो काव्य के मानव के अंत: एवं बाह्य प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण में बेजोड़ हैं। उनकी रचनाएं वसुधैव कुटुंबकम् का आदर्श प्रस्तुत करती हैं। कॉलेज के संस्कृत विभाग की प्रवक्ता डॉ. विजय लक्ष्मी सिंह ने कहा कि कालिदास की रचनाओं में नवीनता, रमणीयता एवं काव्य सौष्ठव की अद्भुत क्षमता का समावेश है।

कालिदास का सौन्दर्य-चित्रण अभीष्ट होता है। प्रकृति-सौन्दर्य एवं मानवीय सौन्दर्य का वर्णन काव्य का अभिन्न अंग है। महाकवि कालिदास सौन्दर्य के उपासक हैं। कालिदास नैसर्गिक सौन्दर्य के प्रेमी हैं। कृत्रिम और दिखावटी श्रृंगार उन्हें नहीं रुचता। वे प्रकृति के द्वारा दिये गये सहज उपादानों से अपनी परिकल्पना की नायिकाओं में अनिन्द्य सौंदर्य का आविष्कार करते हैं। कुमारसम्भव में पार्वती ने वसंत के फूलों से अपने आप को अलंकृत किया है। उसके अशोक ने पद्मराग मणि को धता बता दी है, कर्णिकार ने स्वर्ण की द्युति को खींच लिया है तथा सिंधुवार के पुष्प ही मुक्तामाला बन गये हैं-
अशोकनिर्भर्त्सितपद्मरागमाकृष्टहेमद्युतिकर्णिकारम्। मुक्ताकलापीकृतसिन्दुवारं वसंतपुष्पाभरणं वहंती॥[1]

- मेघदूत में अलका नगरी में मणि-माणिक्य, सोने-चांदी और धन-समृद्धि की कोई कमी नहीं। फिर भी वहाँ की सुन्दरियाँ फूलों से ही अपना अंग-प्रत्यंग सजाती हैं। हाथ में लीलाकमल, केश में बालकुन्द का अनुवेघ, तो कपोलों पर लोघ्र के पराग से शुभ्र वर्ण का आधान, जूड़े में नये कुरवक के पुष्प, कानों में सुन्दर शिरीष और सीमंत[2] में कदम्ब - इस तरह सारे देह में फूल सज उठते हैं-

हस्ते लीलाकमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीता लोघ्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्री:।
चूडापाशे नवकुरवकं चारु कर्णे शिरीषं
सीमंते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्॥[3]

- वस्तुत: कवि ने अपने सौन्दर्यबोध के द्वारा मनुष्य को प्रकृति के निकट आने तथा सहज जीवन अपनाने का संदेश दिया है। इस सौन्दर्य की सर्वोच्च प्रतिमूर्ति तो स्वयं शिव ही हैं, जहाँ शिव हैं, वहीं सौन्दर्य है। यदि शिव हैं तो संसार की सारी वीभत्सता भी अलौकिक रम्यता में परिणित हो जाती है। विवाह के समय शिव के श्रृंगार का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं-

स एव वेष: परिणेतुरिष्टं भावांतर तस्य विभो: प्रपेदे।
बभूव भस्मैव सिताङ्गराग: कपालमेवामलशेखरश्री:।
उपांतभागेषु च रोचनाङ्को गजजिनस्यैव दुकूलभाव:।।
शङ्खांतरद्योतिविलोचनं यदंतर्निविष्टामलपिङ्गतारम्।
सान्निध्यपक्षे हरितालमय्यास्तदेव जातं तिलकक्रियाया:॥
यथाप्रदेश भुजगेश्वराणां करिष्यतामाभरणांतरत्वम्।
शरीरमात्रं विकृतिं प्रपेदे तथैव तस्थु: फणिरत्नशोभा:॥[4]
[5]

- कुमारसम्भव में कवि पार्वती की मुस्कुराहट का वर्णन करता हुआ कहता है कि यदि लाल कोपल पर कोई उज्ज्वल फूल रखा जाय अथवा स्वच्छ मूंगे के बीच में मोती जड़ा जाय तभी ये पुष्प एवं मोती पार्वती की मुस्कुराहट की समानता कर सकते हैं-

पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यात् मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम्।

ततोस्नुकुर्याद् विशदस्य तस्यास्ताम्रौष्ठपर्यस्तरुच: स्मितस्य॥[6]

- कालिदास के सभी पात्र सौन्दर्य से युक्त हैं। पुरुष पात्रों में पुरुषोचित सौन्दर्य है तो स्त्री पात्रों में स्त्रियोचित सौन्दर्य। यहाँ तक कि उन्होंने पशु-पक्षियों के सौन्दर्य का भी विरूपण किया। उनकी दृष्टि में सौन्दर्य की सार्थकता तब है जब वह प्रिय को आकृष्ट करने और उसे जीतने में समर्थ हो। पार्वती जब अपने रूप-सौन्दर्य से महादेव को जीतने में असमर्थ हो जाती हैं और कामदेव को महादेव को क्रोधाग्नि में जलते हुए देखती हैं तो उनका सौन्दर्य-गर्व चूर हो जाता है और वे अपने रूप की निन्दा करने लगती हैं-

निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता॥[7]

- कालिदास की मान्यता है कि प्रेम विरह में बढ़ता है। मेघदूत में वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि प्रेम वियोग में भोग के अभाव के कारण संचित रस वाला होकर बढ़ता ही है, न कम होता है और न ही नष्ट होता है-

स्नेहानाहु: किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगा-

दिष्टे वस्तुन्युपचितरसा: प्रेमराशीभवंति॥[8]

- वस्तुत: प्रेम, वियोग में और अधिक तीव्र हो जाता है। प्रेमियों की परीक्षा वियोग में होती है। संयोगावस्था में भोग के कारण प्रेम भले ही शिथिल हो जाए, वियोग में प्रेम तपस्या का रूप धारण कर लेता है। यही कारण है कि वियोग के पश्चात् संयोग होने पर यह द्विगुणित आनन्दप्रद होता है। कालिदास के सभी पात्र वियोगावस्था के जीवन को तप त्याग, सदाचार, संयम और सामाजिक मर्यादा में बँध कर व्यतीत करते हैं।
- कालिदास के काव्यों में ऋतुसंहार को छोड़कर सर्वत्र प्रेम का उदात्त रूप चित्रित है। ऋतुसंहार में केवल रूप सौन्दर्य का निरूपण है। मेघदूत, कुमारसम्भव एवं रघुवंश में कवि ने प्रेम के आध्यात्मिक रूप का चित्रण किया है। आध्यात्मिक प्रेम ही स्थायी होता है।

विश्व में सैकड़ों भाषायें प्रचिलित हैं । परन्तु जिसे कहा जाता है महान् और जो रुचिपूर्ण है, ऐसा साहित्य, जिसे सभी देशों के लाग पढ़ना चाहते हैं, केवल कुछ ही भाषाओं में मिलता है । इनमें से एक भाषा ''संस्कृत'' है । यह एक प्राचीनतम भाषा है । यह कई भाषाओं की जननी है ।हिन्दी, बंगाली, मराठी, कन्नाड़, तेलुगू और दक्षिण की अन्य भाषायें इससे समृद्ध हुयी हैं ।[7,8]

भाषा को विश्वविख्याति प्राप्त कराने के लिये, असाधारण बुद्धि के कवि और महान विचारकों की आवश्यकता होती है । इस दृष्टि से संस्कृत भाषा बहुत भाग्यशाली है । प्रकृति के चमत्कार, आकाश, तारे, पर्वत, नदियां, सूर्य, चन्द्र, मेघ आदि का अनुष्ठान साधु करते हैं । विश्वशक्ति की यह प्रार्थना वेदों में मिलती है । ये वेद संस्कृत भाषा में हैं । पुराण संस्कृत में हैं । ऐतिहासिक पौराणिक ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत संस्कृत में हैं । अच्छाई और बुराई का संघर्ष इनमें अत्यंत स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है । सत्य के प्रति आस्था, त्यागभावना, वीरता, सभ्यता आदि को वे चित्रित करते हैं । पशु-पक्षियों की सुन्दर कथायें हमें ''परतंत्र'' में मिलती हैं । यह सारी कथायें संस्कृत भाषा में हैं । इन कहानियों द्वारा अच्छे गुण, चतुराई और बुद्धिमानी की प्रशंसा की गयी है । संस्कृत में नाटक-कवितायें, वैज्ञानिक और दार्शनिक लेखों का भी बृहत् भंडार है ।

कवि कालिदास एक ऐसे विद्वान थे जिन्होंने संस्कृत साहित्य को श्रेष्ठ और अत्याधिक योगदान दिया । उन्होंने अपने साहित्य में जीवन के सौंदर्य का वर्णन किया है । हम अपने उदार एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार दूसरों को कैसे प्रसन्ना कर सकते हैं, इस विषय पर भी उन्होंने विचार दिये हैं । उनके चित्रण स्पष्ट व हृदयस्पर्शी हैं । उनकी ''शब्दयोजना'' अद्वितीय है । संक्षेप में, वे अपना कथन अति संुदर रूप से कहते हैं । उनका लेखन उत्तम, अर्थपूर्ण जीवनयापन का तरीका बताता है । उनकी रचनायें बुद्धिमान विचारकों एवं साधारण वाचकों को समान रूप से आनंद देती हैं ।

महान विद्वान कवि:

कालिदास कौन थे ? वे कब, कहां रहते थे ? इसके बारे में बहुत सी चर्चायें हैं । इसका कोई निश्चित उत्तर नहीं प्राप्त हो सका । अनेक पौराणिक कथायें इस विषय में मिलती हैं । एक कथा में यह कहा गया है कि वे एक ब्राह्मण-पुत्र थे, और जब छः मास के थे, तब उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया । एक चरवाहे ने उन्हें पाला । वे कभी पाठशाला नहीं गये । उस समय, भीमशुक्ल काशी नगरी के राजा थे । राजा अपनी पुत्री वासंती का विवाह 'वररुचि' से, जो कि दरबार के विद्वान थे, करना चाहते थे । परंतु राजकुमारी ने इन्कार कर दिया । उसने कहा कि वररुचि की अपेक्षा वह स्वयं अधिक विद्वान है । इससे वररुचि क्रोधित हुये ।

स्वस्ति'' ऐसा ही दे । उन्होंने लड़के को अच्छे राजसी वस्त्र पहनाये और दरबार में ले आये । लड़का दिखने में सुंदर था । मंत्री ने लड़का विद्वान होने का झूठा विश्वास वासंती को दिलाया । विवाह हो गया । वासंती को शादी के बाद सत्य का पता चला । वह बहुत दुखी हुयी । वह देवी काली की अनन्य भक्त थी । उसने अपने पति को देवी की भक्ति करना सिखाया । परंतु कालिदास की भक्ति, प्रार्थनायें देवी को संतुष्ट नहीं कर सकीं । अंत में उसने देवी के सामने अपने प्राण अर्पण करने का निश्चय किया । इससे देवी द्रवित

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

हुयी और उसने कुछ अक्षर कालिदास के जीभ पर अंकित ∴एक दिन राजा के मंत्री ने इस चरवाहे लड़के को देखा, जो एक पेड़ पर बैठकर उसी की जड़ें काट रहा था । 'क्या मूर्ख है ? यह वासन्ती के लिये योग्य वर है ।' यह मन में सोचकर, मंत्री जी लड़के को राजधानी ले आये । मंत्री जी ने और वररुचि ने लड़के को सिखाया कि वह हर प्रश्न का उत्तर '' किये । इसके पश्चात् वह एक महान, विद्वान कवि हुये । देवी काली ने उन्हें आशीर्वाद दिया था, इसलिये उन्होंने 'कालिदास' नाम धारण किया ।

कालिदास के बारे में यह एक अत्यधिक प्रचलित कथा है ।
वैसी और भी कथायें उनके बारे में हैं, परन्तु कोई सत्य प्रमाण उनके विषय में नहीं हैं ।
कालिदास, महाराज विक्रमादित्य के दरबार में थे । इस राजा का काल और स्थान अभी निश्चित नहीं हुआ । परंतु यह माना जाता है कि वे 1400 साल पहिले याने 6वीं शदी में हो गये ।

उज्जैन के प्रति उन्हें भारी लगाव था । उनके साहित्य में उज्जैन का वर्णन मिलता है । पर यह कहना कठिन है कि वे वहीं के थे । फिर भी हम कह सकते है कि वे उज्जैन में रहते थे ।

वैसे देखा जाय तो कालिदास को संपूर्ण भारत की जानकारी थी । 'मेघदूत' काव्य में उन्होंने मध्यभारत के 'रामगिरि' से लेकर हिमालय की अलका नगरी के बीच आने वाले पर्वत, नदियां, नगर, ग्रामों का सुन्दर वर्णन किया है । दूसरे काव्य 'रघुवंश' में कालिदास ने, पूर्व के क्षेत्र असम, बंगाल, उत्कल, दक्षिण में केरल, पांड्य और उत्तर-पूर्व के सिन्ध, गांधार इत्यादि प्रांतों के लोगों का वर्णन किया है । वहां के पर्वत, नदियां, लोगों का रहन-सहन, खानपान, उद्योग-धंधे आदि का सूक्ष्म चित्रण है ।

इनता सुन्दर वर्णन पढ़ने के बाद हम कह सकते हैं कि कवि को उस क्षेत्र की पूरी जानकारी थी । कवि ने उस क्षेत्र का भ्रमण किया होगा, वहां के लोगों का अध्ययन किया होगा, तौर-तरीके समझे होंगे ।

निःसन्देह कालिदास, अत्यंत बुद्धिमान थे, जिसके कारण ही वे एक असाधारण महान कवि हो सके । उनकी रचनायें उनकी काव्यात्मक बुद्धि के साथ-साथ, उनकी विद्वता भी दर्शाती है । उनकी रचनायें जीवन की अच्छाइयां एवं लक्ष्य पर प्रकाश डालती हैं । वे राजमहल का सुखमय विलासी-जीवन और आश्रम का सादा, गंभीर और शांत जीवन दोनों का एक सी सूझ-बूझ से वर्णन कर सकते हैं । पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन के आनंद और विरह व्यथा का वर्णन उनती ही कुशलता से करते हैं । गंभीर और विनोद वे सरलतापूर्वक चित्रित करते हैं । उनकी रचनायें अवर्णनीय हैं । कलात्मकता एवं अद्वितीय शब्दयोजन का सुन्दर चित्रण है ।

कालिदास की सात रचनायें है । 'कुमारसंभव' और 'रघुवंश' दो महाकाव्य हैं । 'मालविकाग्निमित्रम्' 'विक्रमोर्वशीयम्' तथा 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' उनके नाटक हैं । 'मेघदूत', 'ऋतुसंहार' भी महान, सुंदर खण्ड काव्य हैं ।

कुमार-संभव:
कुमार-संभव कालिदासकी एक महान रचना है । आलोचकों के विचार से कालिदास ने केवल प्रथम सात सर्गों की ही रचना की है । इस महाकाव्य में शिव-पार्वती के विवाह का वर्णन है । पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय के सुन्दर वर्णन से उसका प्रारंभ किया गया है । कालिदास लिखते हैं, ''हिमालय पर्वत पर विविध प्रकार का जीवन है । यहां सिद्ध पुरुष रहते हैं । किन्नर एवं सौंदर्यशाली विद्याधर भी रहते हैं । गुफाओं के सामने झूमते बादल मानो परदे जैसे लगते हैं । हाथियों के मस्तक से निकली मणि के प्रकाश से सिंह के मार्ग का पता चलता है; रक्त की बूंदों से नहीं । हिमालय पर्वत पर पाये जाने वाले ''सरला'', वृक्ष का दूध हाथी को अच्छा लगता है । वे अपनी पीठ इसी पेड़ से रगड़ते हैं । इन पेड़ द्वारा हाथी का झुंड किस दिशा में गया इसका पता लगता है । यज्ञ के लिये आवश्यक सारी सामग्री यहां उपलब्ध है । स्वयं ब्रह्मा ने इस पर्वतराज का निर्माण किया है । यह न केवल प्रेमीजनों को सुख देने वाला स्थान है, वरन् जिन्हें तपश्चर्या करनी हो, उनके लिये भी आदर्श स्थान है ।''

पार्वती, पर्वतराज हिमालय की पुत्री है । यथासमय वह एक अद्वितीय सौंदर्य प्राप्त युवती के रूप में बड़ी होती है ।
प्रायः स्त्रियां सौंदर्य-वृद्धि के लिये गहने पहनती हैं, परंतु ऐसा लगता है कि पार्वती की गर्दन ही हार की शोभा बढ़ाती दिखाई देती थी । उनकी वाणी इतनी मधुर थी जितनी की वीणा की झंकार । और उनकी छबि हिरण की याद दिलाती है ।[6]

हमारे पुराणों में नारद एक मुनि हैं । वे भ्रमण करने वाले ईश्वर स्तुति गायक हैं । वे एक बार पर्वतराज के दरबार में आये और उन्होंने भविष्यवाणी की कि, पार्वती का विवाह शिव से होगा । शिवजी पार्वती को स्वीकार करेंगे कि नहीं इस बात पर पर्वतराज को संदेह था । पर्वतराज ने स्वयं शिवजी से पूछा नहीं था । शिवजी ने भी पार्वती को नहीं मांगा था । शिव हिमालय की सबसे ऊंची चोटी पर तपस्या में लीन थे । पर्वतराज ने अपनी कन्या पार्वती को शिव की सेवा में भेजा । पार्वती ने उनकी शुद्ध श्रद्धाभाव से सेवा की । वह प्रतिदिन तपस्या का स्थान स्वच्छ करती, और तपस्या के लिये आवश्यक सामग्री जैसे शुद्ध जल, दूध, फल आदि एकत्रित करतीं ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

जब शिव इस प्रकार तपस्या में लीन थे, तारकासुर नामक राक्षस ने देवताओं को सताना शुरू किया । दुखित होकर देवता ब्रह्मा जी के पास गये । ब्रह्माजी विश्व के निर्माता हैं । देवताओं ने उनसे सहायता मांगी । ब्रह्माजी ने कहा कि पार्वती का विवाह भगवान शिव से होना ही चाहिये, क्योंकि उनका पुत्र ही, तारकासुर का वध करने में समर्थ है ।

परन्तु प्रश्न यह उत्पन्न हुआ कि शिवजी को कैसे जगाया जावे ? और पार्वती से विवाह के लिये कैसे राजी किया जावे ?
देवेन्द्र देवताओं के राजा हैं । उनके दरबार में एक देवता 'काम' हैं, जिनकी पत्नी रति एक अनन्य सुन्दरी हैं । कामदेव में वह शक्ति है जिसके द्वारा वे किसी के भी मन में विवाह की इच्छा उत्पन्न कर सकते हैं । देवेन्द्र ने उन्हें शिव के मन में विवाह की लालसा जागृत करने के लिये लिये भेजा । कामदेव, रति व वसन्त अपने कार्य में लगे ।

वह समय वसन्त ऋतु का नहीं था । परंतु कामदेव ने वसन्त की सुन्दरता व वैभव निर्माण किया । दक्षिण से मन्द पवन के झोंके आने लगे । अशोक वृक्ष में फूल खिलने लगे । पक्षी, मधुमक्खियां ताजे फूलों का व कोमल आम्रपत्तों का स्वाद लेने लगीं ।

परन्तु यह सब शिवजी की तपस्या भंग करने में असफल रहा । कामदेव शिव के पास गये । शिवजी व्याघ्र चर्म पर बैठे देवदार वृक्ष के नीचे तप में लीन थे । शिव की भव्यता, दिव्यता देखकर कामदेव स्तंभित रह गये । कामरूपी बाण उनकी हाथ से गिर पड़े । इसी समय पार्वती अपनी नित्य सेवा के लिये आयी । उन्होंने सूर्य-किरण जैसी लाल रंग की साड़ी पहनी थी । उनकी चोटी पर फूलों का गजरा था । हीरों की माला उनके मस्तक पर चमक रही थी । कोमल लता सी वह पग उठा रहीं थीं ।

यह अनोखा सौंदर्य देखकर कामदेव भी पुनः उल्हासित हुये । पार्वती ने कमल पुष्प की माला शिव को अर्पण करने के लिये जैसे ही हाथ उठाये, एकदम शिवजी तपस्या छोड़कर उठ आये । कामदेव इसी क्षण की प्रतीक्षा में थे । उन्होंने अपनी काम रूपी तलवार चलायी । शिवजी ने पार्वती को देखा वे समझ गये कि तपस्या भंग हुयी है । परन्तु यह सब हुआ कैसे ? कामदेव अपने मदन रूपी बाण लेकर कार्य के लिये तत्पर थे ।

तभी भगवान शिव ने क्रोधित होकर अपना तृतीय नेत्र खोल दिया । भयंकर अग्नि प्रज्वलित हुयी । कामदेव भस्म हो गये व शिवजी अंतर्धान हो गये । अपने पति का नाश देखकर रति बेहोश होकर गिर पड़ी । पार्वती के पिता पर्वतराज दुखित होकर उसे अपने घर ले गये ।

होश में आने पर रति ने आत्मत्याग का निर्णय लिया । तभी आकाशवाणी हुयी कि शिवजी व पार्वती के विवाह के बाद कामदेव पुनः जीवित होंगे ।

इसी समय पार्वती ने घोर तपस्या प्रारम्भ कर दी । उनके स्वयं के आसपास अग्नि प्रज्जवलित की व सूर्य की ओर देखती हुयी खड़ी हो गयी । तेज बारिश, कपकपाने वाली सर्दी, तेज हवायें उनको विचलित न कर सकीं । उनकी परीक्षा लेने हेतु शिव जी ने ब्रह्मचारी का वेश धारण किया व शिव के लिये अपशब्द कहने लगे । ''जिसके गले की शोभा सर्प हैं, ऐसे व्यक्ति को तुम चाहत हो ? तुम तो शानदार रेशमी वस्त्र पहनी हुयी हो । तुम उस गजचर्मधारी को क्यों पूजना चाहती हो ? जब उसके साथ तुम बूढ़े बैल पर सवारी करोगी तो क्या लोग हंसेगे नहीं ? और इन सबके बावजूद उसकी तीन आंखे हैं । तुम ऐसा पति क्यों चाहती हो ?''[8]

ब्रह्मचारी के वेष में शिव को न पहचानने के कारण पार्वती को इस बात को सुनकर क्रोध आया । उसने दासियों से कहा इस ब्रह्मचारी को भगा दो । और वहां से जाने लगी । तभी शिव अपने असली रूप में आ गये । उनका पवित्र रूप देखकर पार्वती गद्गद हो गयी । वह स्तब्ध खड़ी रहीं । इस दृश्य का वर्णन कवि ने अत्यन्त सुन्दर शब्दों में किया है ।

पार्वती ने सखी द्वारा शिवजी को सन्देश भेजा कि वे पिताजी से विवाह के बारे में बात करें । शिवजी ने सात ऋषियों को द्वारा पर्वतराज को सन्देश भेजा । पर्वतराज सहर्ष तैयार हो गये । विवाह बहुत ही शानदार ढंग से संपन्न हुआ ।
कालिदास की 'कुमारसंभव' रचना विवाह के बाद खत्म होती है । फिर शिव-पार्वती के पुत्र कुमार का जन्म, उसके द्वारा देव सेना का नेतृत्व, तारकासुर का वध आदि अन्य कवि द्वारा लिखा गया है ।

कालिदास की रचनायें तीन विशेषताओं के लिये प्रसिद्ध हैं । उनमें सौदर्य की अनुभूति, कलात्मकता तथा हमारी प्राचीन परम्परा को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है । हिमालय पर्वत का चित्रण और वसंत ऋतु के आगमन का वर्णन इतना अधिक सुन्दर है कि, शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते । उनके वर्णन इतने सजीव रहते हैं कि सही चित्र आंखों के सामने आता है, और प्रत्यक्ष देखने का अनुभव प्राप्त होता है । पार्वती जी के सौंदर्य का वर्णन उनके कवित्व भावना को चार चांद लगा देता है । कामदेव के भस्म होने के बाद, रति का विलाप, आंखों में आंसू लाता है । शिव पार्वती के वैवाहिक जीवन के प्रसंग, हर्ष व दुःख की भावना भी उन्होंने अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से चित्रित की है ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

कालिदास की रचनायें हमारी संस्कृति के सुन्दर शब्दचित्र प्रस्तुत करती हैं । प्रश्न उठता है कि वह संस्कृति क्या है ? संस्कृति का अर्थ है हमारा आचरण मन का बाहरी व्यवहार का । जिस प्रकार फूलों के रंग व सुगंध मन को मोह लेते हैं, उसी भांति हमारे अच्छे आचरण का प्रभाव होता है । आसपास के वातावरण को हम आनंदित कर सकते हैं । परिपक्व मनुष्य के विचार, वाणी व कार्य दूसरों को आनन्द देते हैं । इन सब का तो कालिदास ने बहुत शानदार वर्णन किया है । इसके साथ ही उन्होंने कार्य और व्यवहार का भी मनोहारी वर्णन किया है । पर्वतराज का शिव के पास पार्वती के विवाह हेतु न जाना, परन्तु पार्वती को शिव की सेवा में भेजना, शिव का सात ऋषियों द्वारा विवाह प्रस्ताव भेजना यह सब प्रसंग कालिदास की उच्च अभिरुचि व आदर बढ़ाने में सहायक हैं । पार्वती का एकाग्रचित्त से सेवा करना, शिव के विरुद्ध अपशब्द न सहन करना, ये सभी बातें पार्वती की उच्च संस्कृति जिसमें वह पली थीं, दिखाती हैं । पार्वती का सौदन्र्य देखकर शिव किंचित विचलित हुये थे । परन्तु जब उन्हें कामदेव के छल का पता चला तो उन्होंने उस भस्म कर दिया । ये सब बातें पार्वती की परीक्षा लेती हैं । सात ऋषियों को राजा के पास भेजना शिवजी के मन का बडप्पन व परिपक्वता दर्शाता है । वैसे देखा जावे तो शिव, पार्वती के बाह्य सौन्दर्य से प्रभावित नहीं हुये थे । वे तो उसके उच्च गुण व तपस्या देखकर मोहित हुये थे । शिव-पार्वती तप करके एक त्यागमय जीवन जी रहे थे । दोनों भी पवित्रता की प्रतिमा थे । उनके पुत्र ''कुमार'' थे । माता-पिता के तप ने कुमार को शक्ति प्रदान की थी जिससे उन्होंने राक्षस तारक का वध किया ।

कालिदास का काव्य हमें एक स्पष्ट व सुन्दर चित्रण देता है कि उत्तम व अर्थपूर्ण जीवन बिताने का मार्ग जो हमें हमारे पूर्वजों ने बताया है, उसी पर हमें चलना चाहिये ।

रघुवंश:
कालिदास का दूसरा महाकाव्य 'रघुवंश' है । उसमें उन्नाीस अध्याय हैं, जिन्हें सर्ग कहते हैं । इस महाकाव्य में राजा दिलीप, रघु, अज, दशरथ, श्रीराम, लव और कुश का इतिहास है । बहुत संक्षेप में नल से लेकर अग्निवर्ण तक के इक्कीस राजाओं का वर्णन भी है । आरम्भ में कवि राजा रघु के राजवंश की प्रशंसा करते हैं । [3,4]

राजवंश कुलीन, श्रेष्ठ है । उससे संबन्धित सभी व्यक्ति अपनी शिक्षा समय पर उत्तम गुरुजनों से प्राप्त करते थे । वे समय पर विवाह करते थे और न्यायपूर्ण तथा धर्माधिष्ठित राज्य करते थे । वृद्धावस्था प्राप्त होते ही वे अपना राज्य उत्तराधिकारी को सौंप कर संन्यास लेते थे । योग द्वारा शरीर-त्याग करते थे । वे धन इसलिये कमाते थे कि जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता कर सकें । यश प्राप्ति के लिये वे युद्ध करते थे । अपराधियों को सजा मिलती थी । राजा लोग अत्यन्त सतर्क एवं निर्भीक रूप से राज्य कर अपना इच्छित प्राप्त करते थे । उनका साम्राज्य समुद्र तक फैला था । वे अपना रथ स्वर्ग तक ले जाते थे । कवि कालिदास का प्रमुख उद्देश्य रघुवंश के राजाओं के गुणों का वर्णन करना है । कथा राजा दिलीप से प्रारंभ होती है ।

राजा दिलीप कुलीन व्यक्ति थे। वे ऊंचा कद, चैड़ा सीना व आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे । वे साक्षात् क्षत्रिय धर्म का साकार रूप थे । उनके व्यक्तित्व जैसी ही उनकी बुद्धि थी । उनकी बुद्धि उनके अपार ज्ञान से मेल खाती थी । इसलिये उनके कार्यों में उनके उच्च ज्ञान की झलक मिलती थी व परिणाम हमेशा प्रयत्नों के अनुरूप होते थे ।

उनकी पत्नी सुदक्षिणा आदर्श पत्नी थी । पर पुत्र हीन होने से वे दुखी थे । वे महर्षि वशिष्ठ के आश्रम गये । ऋषि न उन्हें कामधेनु की पुत्री नंदिनी की सेवा करने के लिये कहा ।

उनके अनुसार दिलीप ने इक्कीस दिन जंगल में जाकर उसकी सेवा की । आखिरी दिन एक सिंह ने नन्दिनी पर हमला किया । जैसे ही राजा ने अपनी तीर उसे मारने के लिये निकाला, कि उनका हाथ धनुष से चिपक गया । तभी मनुष्यवाणी में सिंह बोलने लगा, ''हे राजन ! यह गाय मेरा भक्ष्य है इसलिये आप आश्रम वापस जाइये ।'' तब राजा दिलीप ने स्वयं के शरीर को सिंह के भोजन के रूप में प्रस्तुत कर दिया । अचानक सिंह अदृश्य हुआ । वास्तव में सिंह नन्दिनी के द्वारा राजा की परीक्षा लेने के लिये बनाया गया था । नन्दिनी ने आशीर्वाद दिया कि उसका दूध पीने के पश्चात राजा को पुत्र प्राप्ति होगी ।

आश्रम जाकर राजा व रानी ने नंदिनी का दूध पिया । वे राजधानी वापस लौटे । यथासमय रानी सुदक्षिणा ने एक पुत्र को जन्म दिया । उसका नाम ''रघुराज'' रखा गया । हमें राजा दिलीप के रूप में सत्य के प्रति आस्था एवं उच्च नैतिक धार्मिक, आदर्शों को अपनाने वाले एक राजा का वर्णन मिलता है । राजा व साधुओं के घनिष्ठ संबन्ध रहते थे, और साधु, जो कि पवित्रता की प्रतिमा होते थे, उनके आशीर्वाद द्वारा महान व्यक्तित्व जन्म लेते थे ।
कवि ने हमें राजा रघु की कहानी भी सुनाई है । जब राजा रघु राजकुमार ही थे, उन्होंने अश्वमेघ यज्ञ के लिये पिता द्वारा भेजे गये घोड़े की, शौर्य व साहस से रक्षा की । देवों के राजा इन्द्र व रघु में भयंकर युद्ध छिड़ा । तब राजा दिलीप सौंवा 'अश्वमेघ' यज्ञ कर रहे थे । रघु के पराक्रम से प्रसन्नाा होकर इन्द्र ने राजा दिलीप को आशीर्वाद दिया । तद्नन्तर दिलीप ने राज्यभार पुत्र 'रघु' को सौंपकर वन में प्रस्थान किया । वहां उन्होंने अपना शेष जीवन तपस्या में बिताया ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

रघु ने अनेक राज्य जीते व अपनी राज्य की सीमा बढ़ाई । उसने ''विश्वजीत'' नामक महान यज्ञ किया । उसके पश्चात अपनी धनसम्पदा दान में दे दी । उसी समय एक ऋषिपुत्र कौत्स आये व उन्होंने गुरू-दक्षिणा के लिये राजा से सहायता मांगी । राजा ने तब तक अपनी संपूर्ण धन-सम्पत्ति दान कर दी थी । राजा केवल मिट्टी के पात्र में शुद्ध जल दे सकते थे । जब उन्हें ऋषिपुत्र की आवश्यकता का पता चला तो उन्होंने कुबेर पर चढ़ाई करने का निश्चय किया । स्वयं कुबेर जल्दी से आये और रघु की तिजोरी धर से भर दी, ताकि 'रघु' ऋषि-पुत्र कौत्स की इच्छा पूर्ण कर सकें ।

रघु के पुत्र अज थे । वे अत्यन्त सुन्दर व दयालु स्वभाव के थे । बड़े होने पर वे विदर्भ राज्य में इन्दुमति के स्वयंवर के लिये गये । जैसे ही राजकुमारी इन्दुमति ने स्वयंवर कक्ष में प्रवेश किया, उसकी दासी सुनन्दा ने वहां उपस्थित प्रत्येक राजकुमार के सौन्दर्य, पराक्रम, वीरता का परिचय कराया । सुनन्दा ने राजकुमार अज का परिचय भी दिया । उसके सुन्दर गुणों व परिवार की प्रशंसा की । इन्दुमति ने वरमाला उसके गले में डाल दी ।

इस स्वयंवर का कालिदास ने बहुत सुन्दर वर्णन किया है । राजकुमार का वर्णन भी सुन्दर है । उनका शारीरिक सौंदर्य, वीरता, धन आदि का चित्रण मनमोहक है । किसी भी राजकुमार को किसी दृष्टि से कम नहीं कहा गया । इंदुमति उनहें कुछ दोषों के कारण अस्वीकार करती है ऐसा भी नहीं । वैसे भी प्रत्येक मनुष्य का व्यक्तित्व भिन्ना रहता है । कवि भी सोचता है कि कोई भी कारण नहीं दिखता कि हम एक दूसरे के प्रेम में क्यों पड़ते हैं । यह चित्रण कवि की उच्च अभिरुचि, सौंदर्य दृष्टि और उल्हासित मनोवृत्ति का परिचायक है ।

इन्दुमति और राजा अज का विवाह बहुत शानदार ढंग से संपन्ना हुआ । परन्तु निराश राजकुमारों ने बदले की भावना से अज पर हमला किया । भयंकर युद्ध हुआ । अज सब को पराजित करके विजेता होकर अपनी वधू के साथ राजधानी वापस लौटे । राजा रघु ने पुत्र की वीरता व शौर्य को देखकर राज्यभार उसे सौंपा, और अयोध्या की बाहरी सीमा में आश्रम में निवास करने लगे ।

पिता, योग की सीढ़ी चढ़ते हैं और पुत्र राजसिंहासन पर बैठता है । इन दोनों के कार्य की लयबद्धता और सूझबूझ का वर्णन कवि ने किया है । पिता का मार्गदर्शन ऋषिमुनि करते हैं और पुत्र की सहायता मन्त्रिगण । पिता ने सब सांसारिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त की है, पुत्र ने बाहरी शत्रुओं को पराजित किया है । राजा रघु का जीवन चरित्र दर्शाता है कि एकाग्रता से ईश्वरोपासना करने पर जीवन में शान्ति मिलती है, संतोष प्राप्त होता है । पवित्र आचरण द्वारा कोई भी मनुष्य सच्चा आनन्द, संतोष प्राप्त कर सकता है, यह राजा अज के जीवन द्वारा प्रमाणित होता है ।

यद्यपि राजा दिलीप और रघु महान व्यक्ति थे परन्तु हम उनमें अन्तर महसूस करते हैं । हमारे प्रबुद्ध पूर्वजों द्वारा मनुष्य के लिये चार लक्ष्य रखे गये हैं । वे हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । धन कमाने की लालसा या सुख-प्राप्ति की इच्छा दोनों भी गलत नहीं । परन्तु दोनों का उचित रूप से व्यवहार होना चाहिये । धन नैतिक ढंग से ही कमाना चाहिये । धन इस प्रकार से अर्जित करना चाहिये कि किसी के साथ अन्याय न हो । उस धन का अच्छे व योग्य कारणों में व्यय करें । दूसरों का अहित या बुरा हो, इस तरीके से धन का उपयोग न करें । मनुष्य को ऐसा जीवन जीना चाहिये कि उसे पापों से मुक्ति मिले और मृत्यु के समय दिव्यत्व प्राप्त हो । हम देखते हैं कि राजा दिलीप के जीवन में धर्म का प्रभुत्व था । वे इतने त्यागी थे कि गौ ''नन्दिनी'' को बचाने हेतु सिंह का भक्ष्य बनना उन्होंने स्वीकार किया । धन कमाने और व्यय करने की सही रीति हमें राजा 'रघु' के जीवन में देखने को मिलती है । बहुत से राज्य जीनकर कमाया हुआ धन उन्होंने जरूरतमंदों में बांट दिया और अंत में उनके पास केवल एक मिट्टी का बर्तन बचा था ।[4,5]

राजा ''अज'' को प्रजा का स्नेह और प्रेम प्राप्त था । एक दिन वे अपनी पत्नी समेत उद्यान में विहार कर रहे थे । नारद मुनि आकाश मार्ग से जा रहे थे । नारद मुनि के वीणा की माला सरक गयी व इन्दुमति के सिर पर गिर पड़ी । वह बेहोश हो गयी । और उसकी मृत्यु हो गयी । ''अज'' को गहरा सदमा पहुंचा और वे अचेत हो गये । मंत्रियों ने उन्हें होश में लाया । तब इन्दुमति का सिर गोद में लेकर वे विलाप करने लगे । ''क्या एक फूल तुम्हारा जीवन ले गया ? मैंने यह माला हाथ में पकड़ी हे? फिर भी मैं क्यों नहीं मरता हूं ? यह परमेश्वर की इच्छा है कि विष, अमृत में बदलता है, या अमृत, विष में बदलता है । तुम मेरा सब कुछ थी । पत्नी, सलाहकार, मददगार और कला सीखने में मेरी शिष्या । तुमकों खींचकर मृत्यु ने मेरा सब कुछ लूट लिया ।''

कवि ने ''काम'' जीवन का आनन्द लेने की इच्छा अज के जीवन में दर्शाई है । हम यहां उसके सुखी जीवन एवं विरह का वर्णन पाते हैं । अज उसके लिये बहुत दुखी होते हैं और अपना जीवन नदी में डूबकर, समाप्त करते हैं । क्योंकि वे पत्नी का विरह नहीं सहन कर सके । समर्पित प्रेम-भाव का यह अत्युत्तम उदाहरण है ।

पहले आठ सर्गों में, ''राजा दिलीप, रघु और अज'' की कहानियां हैं । इसके बाद के अध्याय, दशरथ, श्रीराम और लव-कुश के विषय में हैं । कवि संक्षिप्त में रामायण के प्रसंग देते हैं । वैसे रामायण की कथा प्रसिद्ध है । परन्तु कालिदास की वर्णनशैली अद्वितीय है । वाल्मीकि रामायण, सादी, सुगम, सुन्दर व असली हीरे जैसी चमकदार है । कालिदास ने इस हीरे जेसे चमकदार विषय को अपनी शैली द्वारा तराश कर अधिक चमकीला बनाया है ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

कुश के बाद उनके पुत्र ''अतिथि'' सिंहासन पर बैठे । अतिथि ने धमे के आदेशानुसार राज्य किया । उसने राज्य की शत्रुओं से रक्षा की । साधु लोग निर्भीकता से तप करते थे । कवि कालिदास ने युवा राजा की बहुत प्रशंसा की है ।

कालिदास ने रघुवंश के इक्कीस राजाओं की सूची दी है, जो अतिथि के बाद सिंहासन पर बैठे । कवि के अनुसार इस वंश के अंतिम राजा अग्निवर्ण, विलासी थे । उन्होंने राजा के कर्तव्यों का पालन नहीं किया । यह कहा जाता है कि जब प्रजा, राजा के दर्शन हेतु आती थी, तब वह खिड़की पर पैर पसारकर आराम से बैठता था । रोगों से ग्रस्त होकर उसने बिस्तर पकड़ा । उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी रानी ने विद्वान मन्त्रिगण की सहायता से राज्य चलाया । इस प्रकार रघुवंश का वर्णन इस दुखित घटना के साथ समाप्त होता है ।

''रघुवंश'' हमारी प्राचीन ऐतिहासिक संस्कृति व रीतिरिवाज को प्रकट करने वाला ग्रन्थ है । हमारे पूर्वजों ने, कौन अच्छा राजा हो सकता है, कौन तप कर सकता है, मनुष्य को कैसा उद्देश्य-पूर्ण जीवन बिताना चाहिये आदि की विस्तृत चर्चा की है । कवि ने परस्पर विरोधी चरित्र जैसे वशिष्ठ, दिलीप, रघु, अज इत्यादि चित्रित किये हैं । अग्निवर्ण इस प्रकार के राजा थे जिन्हें ''दुराचारी'' की संज्ञा प्राप्त हुयी थी ।

शाकुन्तल एक ''अति उत्तम रचना'':
'मालविकाग्निमित्र' कालिदास का पहला नाटक है । इस नाटक को लोग स्वीकर करेंगे या नहीं इस विषय में कवि अनिश्चित थे । उन्होंने अपनी विनम्रता प्रदर्शित की है । वे कहते हैं 'सब पुरानी वस्तुयें अच्छी नहीं होती, न ही नयी चीज बुरी होती है । ऐसा भी हो सकता है कि एकाध वस्तु पुराने जमाने में ज्यादा उपयोगी न हो और नई चीज ज्यादा अच्छी हो । नाटक का विषय है ''मालविका'' व ''अग्निमित्र'' की प्रेम कहानी ।

कालिदास का दूसरा नाटक ''विक्रमोर्वशीय'' है । यह राजा ''पुरूरव'' और स्वर्ग की अप्सरा 'उर्वशी' के प्रेम और विरह की कहानी है ।

''अभिज्ञान शाकुन्तल'' कालिदास की सर्वोत्तम रचना है । इस अति उत्तम रचना का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है । महाभारत के 'आदि पर्व' में शकुन्तला की कथा है । राजा दुष्यन्त शिकार खेलते हुये मुनि कण्व के आश्रम में आते हैं । मुनि आश्रम में नहीं थे । उनकी मुंहबोली कन्या अतिथि की देखभाल करने लगी । उसे देखते ही राजा ''दुष्यन्त'' उसके सौन्दर्य पर मोहित हुये, और उन्होंने उससे विवाह के लिये प्रस्ताव रखा । शकुन्तला ने एक शर्त रखी । उसने राजा से वचन मांगा कि उसका (होनेवाला) पुत्र राज्य का अधिकारी हो । राजा ने यह बात स्वीकार की । उन्होंने विवाह किया और कुछ दिन सुख-शान्ति पूर्वक बिताये । उसके बाद राजा दुष्यन्त राजधानी लौट आये । यथासमय शकुन्तला ने एक पुत्र को जन्म दिया । जिसका नाम सर्वदमन रखा गया ।

छह वर्ष बीत गये परंतु राजा दुष्यंत ने अपनी पत्नी और पुत्र को नहीं बुलाया । मुनि कण्व ने स्वयं ही शकुन्तला को राजमहल भेजने का निर्णय लिया । जब वह राजा के निवास स्थान पर आयी, राजा ने उसे पहिचानने से इन्कार कर दिया । शकुन्तला अत्यंत दुखी हुयी । इस बीच स्वर्ग से राजा दुष्यंत को आज्ञा हुयी कि यह तुम्हारा पुत्र है इसे स्वीकार करो । राजा ने पुत्र को स्वीकार किया और यह पुत्र आगे चलकर 'भरत' नाम से विख्यात हुआ ।

कालिदास ने महाभारत के इस प्रसंग पर अत्यंत सुन्दर नाटक प्रस्तुत किया है । दुष्यंत और शकुन्तला का प्रथम मिलन अत्यन्त मधुर और सुन्दर है ।

शिकार खेलते हुये राजा दुष्यंत कण्व मुनि के आश्रम में आते हैं, और अपनी सखियों के साथ पौधों को पानी देती हुयी शकुन्तला को देखते हैं । उसके सौंदर्य से मोहित होकर वे उससे विवाह करना चाहते हैं । शकुन्तला भी इस राजपुरुष पर मुग्ध होती है । तब वे गन्धर्व पद्धति से विवाह करते हैं । शकुन्तला को छोड़कर राजा राजधानी लौटते हैं । शकुन्तला अपने पुत्र को युवराज बनाने की बात कहती ही नहीं क्योंकि यह होगा ही यह वह मान लेती है । दुर्वासा ऋषि कण्व मुनि के आश्रम में उनसे मिलने आते हैं । कण्व ऋषि आश्रम में नहीं थे । राजा के विचारों में डूबी हुयी शकुन्तला से दुर्वासा ऋषि कहते हैं, ''अतिथि आया है,'' शकुन्तला को यह सुनाई देता । इसलिये दुर्वासा, (जो शीघ्र क्रोध के लिये प्रसिद्ध हैं) अत्यंत क्रोधित होते हैं, और उसे शाप देते हैं कि तुम ''जिसके ख्यालों में डूबी हो, वह तुम्हें भूल जावेगा ।'' बाद में दयावान होकर वे कहते हैं कि, ''जब वह तुम्हें उसके द्वारा दी गयी निशानी देखेंगे तो तुम्हें पहचान लेंगे ।'' दुर्भाग्य से राजा दुष्यन्त द्वारा दी गयी अगूंठी खो जाती है और राजा उसे भूल जाते हैं । मुनि कण्व गर्भवती शकुन्तला को राजदरबार में अपने शिष्यों के साथ भेजते हैं । कवि कालिदास कण्व द्वारा शकुन्तला की बिदाई का बहुत ही हृदयस्पर्शी वर्णन करते हैं । सम्पूर्ण आश्रम दुख में डूब जाता है । कण्व, शकुन्तला की सहेलियां उसकी बिदाई पर आंसू ढालती हैं । पशु-पक्षी, पेड़-पौधे दुख से झुक जाते हैं ।[8]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.712 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 8, Issue 5, September 2021 |

शकुन्तला के आने पर राजा दुष्यन्त उसे पहचानते भी नहीं । राजा उसके तरफ देखना भी नहीं चाहते । क्योंकि वह एक पराई स्त्री है । वह विश्वास नहीं करते कि यह स्त्री उनकी पत्नी है । मार्ग में अंगूठी खो जाने से शकुन्तला बहुत दुखी होकर बेहोश हो जाती हे । बाद में दैवी शक्ति उसे उठाकर ले जाती है ।

कुछ दिन बाद मछली के पेट में अंगूठी मिलती है । अंगूठी देखकर राजा को सब बातें याद आती हैं । शकुन्तला को अस्वीकार करने से वे बहुत दुखी होते हैं । दुष्यन्त जो कि राजा इन्द्र के संदेश पर उन्हें मदद करने स्वर्ग गये थे, लौटते समय मरीचि ऋषि आश्रम में जाते हैं । वहीं उन्हें एक छोटा लड़का, सिंह के शावक का मुंह बड़ी निडरता से खोलता हुआ दिखाई देता है । पूछताछ पर उन्हें पता लगता है कि वह और कोई नहीं उनका पुत्र सर्वदमन है । दुष्यन्त, उनकी पत्नी और पुत्र का सुखद मिलन होता है ।

नाटक के अन्त में हम शकुन्तला के दुख से द्रवित हो जाते हैं और हम समझ नहीं पाते है कि राजा दुष्यन्त को दोषी मानें या उस दिव्य शक्ति को जिसने यह घटनाक्रम चलाया । नाटक के अन्तिम दृश्य में हम शकुन्तला को अत्यन्त साधारण साड़ी में देखते हैं तब भी वह वैभव व गरिमा की प्रतिमा लगती है; यद्यति वह कम उम्र की है । उस के शब्द बहुत अर्थपूर्ण और गंभीर हैं । वह साक्षात तपस्विनी है । एक चंचल मुग्धबाला से, एक सेवाभावी युवती के रूप में शकुन्तला का परिवर्तन देखकर हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं । शकुन्तला की सखियों का उसको प्यास से चिढ़ाना, कण्व ऋषि की दूरदृष्टि, राजा का शकुन्तला के विरह से दुखी होना, शकुन्तला का निर्मल प्रेम, दैवी शक्ति द्वारा पुनर्मिलन, यह सब प्रसंग हमारे सामने एक बहुत बड़ा जीवन-चित्र पेश करते हैं ।

मेघदूत एक सुन्दर प्रेम काव्य है । यक्ष, जो कि एक वर्ष के लिये पत्नी से दूर किया जाता है, उसे एक सन्देश भेजता है । उसकी पत्नी अलका नगरी में रहती है । यक्ष मेघ से कहता है ''जाओ और मैने जो कहा है वह उससे कहा ।'' एक मेघ को सन्देशवाहक के रूप में चुना जाना एक विलक्षण बात है । मेघ की 'रामगिरि' से अलका नगरी की यात्रा का वर्णन बहुत सुन्दर है । नदियां, पहाड़-पर्वत, गांव और शहर, बड़े-बड़े खेत, किसान कन्या, शहरी लड़कियां, पक्षी, मधुमक्खियां, इस सभी का कवि ने बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है । यह समूचे विश्व का सुन्दर चित्रण है । अलका नगरी, 'यक्ष' का घर, आसपास का बगीचा, यक्ष की पत्नी जो वीणा के तार छेड़ रही है उसका सौन्दर्य आदि का वर्णन मनमोहक है ।

IV. निष्कर्ष

''ऋतु संहार'' एक छोटी से काव्यरचना है जिसमें छः ऋतुओं का वर्णन है । वैसे यह भी आकर्षक है । कवि यहां हर बात में सौन्दर्य देखता है । प्रत्येक ऋतु का अलग पहलू कवि का मन मोह लेता है । यह अत्यंत रोमांचक दृश्य है ।

कुल मिलाकर कालिदास की रचनायें हमें सौन्दर्य का आनन्द देती हैं । उनके वर्णन हमें मोह लेते हैं । उनके साथ हम सब उच्च संस्कृति एवं उच्च व्यक्तित्व में विचरण करते हैं । उनकी रचना उस फूल के समान होती है, जो फूलने पर अपना सुगन्ध फैलाती है, और मनुष्य का परिपक्व प्रगल्भ मन और बुद्धि चारों ओर के लोगों को, सन्तोष देती है । कालिदास की रचना के साथ हम उस विश्व में प्रवेश करते हैं जहां के लोग मन और तन से पवित्र और तेजस्वी हैं । मनुष्य के स्वभाव को उच्च और नैतिक स्तर तक पहुंचाने की सीख हम ग्रहण करते हैं । पार्वती, दिलीप, रघु, अज, शकुन्तला, कण्व, दुष्यन्त के संपर्क में आकर हम सभी प्रसन्नता अनुभव करते हैं । इसी अद्‌भुत अनुभूति के लिये ही हम और अन्य सभी लोग कालिदास की रचनायें पढ़ते हैं ।[8]

संदर्भ

1. कुमारसम्भव, 3।53
2. ↑ मांग
3. ↑ मेघदूत, उत्तरमेघ - 2
4. ↑ कुमारसम्भव, 7।31-34
5. ↑ शिव का वेष वही रहा, पर उनकी विभुता से वह अन्य भाव को प्राप्त हो गया। उनके देह पर लिपटी चिताभस्म ही अंगराग हो गयी, कपाल ही शेखर बन गया, गजाजिन दुकूल और तृतीय नेत्र ही तिलक बन गया। शरीर पर लिपटे सर्पों का विनिवेश ही बदलना था कि वे आभूषण की भांति सज गये।
6. ↑ कुमारसम्भव, 1.44
7. ↑ कुमारसम्भव, 5.1
8. ↑ मेघदूत, 2.52